सामाजिक विज्ञान में शिक्षण की चुनौती

– भूपेंद्र सिंह

बतौर सामाजिक विज्ञान शिक्षक हम बच्चों को संवैधानिक मूल्यों के साथ ही साथ मानवीय मूल्यों के विकास के अधिक अवसर दे सकते हैं। सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षण का अहम पहलू शिक्षा व्यवस्था के सामाजिक रूप को देखना, समझना तथा समाज के अंतर्संबन्धों को बच्चों को समझाना होता है।

हमारा दायित्व है शिक्षण को एक पेशेवर गतिविधि के तौर पर देखना। शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर हो रहे परिवर्तनों की चुनौतियों को स्वीकार करना और आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार रहना। यह जिम्मेदारी तब और अधिक हो जाती है जब हम कक्षा में सामाजिक विज्ञान शिक्षण से जुड़े हैं। मेरा मानना है कि बतौर सामाजिक विज्ञान शिक्षक हम बच्चों को संवैधानिक मूल्यों के साथ ही साथ मानवीय मूल्यों के विकास के अधिक अवसर दे सकते हैं।

सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षण का एक अहम पहलू शिक्षा व्यवस्था के सामाजिक रूप को देखना–समझना तथा समाज के अंतर्संबंधों को बच्चों को समझाना होता है। बच्चों को विषयवस्तु के साथ–साथ स्थानीय परिवेश का अवलोकन कराना होगा। उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश को समझना। बच्चों को यह भी बताना आवश्यक है कि जिस समाज में हम रहते हैं उसके विभिन्न ऐतिहासिक, राजनैतिक, भौगोलिक, आर्थिक और सांस्कृतिक घटक होते हैं। उनके आस–पास घटने वाली घटना को देखने के विभिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं। समाज में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव पर अलग–अलग दृष्टिकोण से बच्चों के बीच रखना भी आवश्यक हो जाता है। सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षक को बच्चों में संवैधानिक मूल्यों के साथ ही साथ मानवीय मूल्यों के विकास जैसे प्रेम, सद्भाव, बंधुत्व की भावना, समता–समानता आदि का विकास भी सुनिश्चित करना होगा।

सामाजिक विज्ञान विषय मूर्त एवं अमूर्त दोनों ही रूपों में

है। जहां हम एक ओर स्मारकों, ऐतिहासिक भवनों, समुद्र, नदी, पहाड़ आदि को मूर्त रूप में देखते हैं, सामाजिक बदलावों को समझते हैं। वहीं दूसरी ओर संवैधानिक मूल्य, समता–समानता, विविधता का सम्मान, सामाजिक रीति–रिवाज, संस्कृति, सामाजिक मान्यताएं आदि भी हैं।

मेरा अनुभव है जब मैं स्वयं स्कूल में पढ़ता था तब कक्षा 5 व 8 की बोर्ड परीक्षा होती थी। तब हमारे गुरूजी हमें प्रश्न–उत्तर रटने को कहते थे। परीक्षा का भय दिखाया जाता था क्योंकि गुरूजी चाहते थे कि हमारे विद्यालय के बच्चे प्रथम स्थान प्राप्त करें। साथ ही मेरा विद्यालय प्रथम आये। इस प्रतियोगिता के लिए हमारे गुरुजी बहुत मेहनत करते थे। वे प्रयास करते रहते थे कि हमारे मन में प्रतियोगिता का एवं गुरूजी का भय बना रहे। हम भी यही प्रयास करते रहते थे कि कहीं गुरूजी नाराज न हो जाएं। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे लगता है क्या

उस समय की शिक्षा का अर्थ ही रटना–रटाना तथा सम्मान का अर्थ भय ही था ? और ऐसा था तो क्यों था ?

मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं शिक्षक बनूंगा। जब मैं शिक्षक बना तो शुरुआत में मुझे लगा कि यह एक सरल कार्य है। बच्चों को पाठ पढ़ा दो, प्रश्न–उत्तर लिखा दो और साल के अंत में परीक्षा ले लो। लेकिन जब मैंने इस कार्य की गहराई को समझने का प्रयास किया तो मुझे महसूस हुआ कि यह तो दुनिया के कठिन कामों में से एक है। हां यदि आप बहाने बनाने लगें तब तो ठीक है कि आप अपनी कमियों का दोष बच्चे, अभिभावक अथवा पिछली कक्षा के शिक्षकों पर डाल कर जिम्मेदारी से मुक्त होने का नाटक कर ही सकते हो। किन्तु हमें यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि हमारे विद्यालयों में जो बच्चे आते है उनकी सारी जिम्मेदारी हमारी ही है एवं उसी के अनुसार हमें अपनी कार्ययोजना बनानी चाहिए।

जब मैंने इस कार्य को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया तब मैंने बच्चों से स्वयं सीखने की शुरुआत की। मैंने यह अनुभव किया कि सारी पुस्तकें, पाठयक्रम, पाठयचर्या सभी बच्चों में कुछ क्षेत्रों में विकास के लिए प्रयासरत है। मैंने अपनी समझ के अनुसार कुछ प्रमुख क्षेत्रों को चुना एवं बच्चों में इनके विकास के लिए कार्य शुरू किया।

1. बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास
2. बच्चों में प्रश्न पूछने की उत्सुकता एवं हिम्मत का विकास
3. बच्चों के अन्दर लेखन कार्य के प्रति रुचि पैदा करना

अपने शिक्षण कार्य के दौरान अपने प्रधान अध्यापक से चर्चा करते हुए मैंने उपरोक्त बिन्दुओं पर एक कार्य योजना का निर्माण किया। सभी बिन्दुओं पर कार्य करने के लिए कुछ विशेष प्रयास करने की आवश्यकता थी।

इसके लिए मैंने छोटे–छोटे प्रयास बच्चों के साथ मिलकर किये समय के साथ यह प्रयास सफल भी होते हुए नजर आने लगे। प्रार्थना सभा में हर रोज अलग–अलग बच्चों से प्रार्थना सभा के संचालन करने की जिम्मेदारी दी। जिस बच्चे को अगले दिन संचालन करना होता था उसे एक दिन पूर्व ही अलग से तैयारी करवाई जाती थी। इसी प्रकार विद्यालय की बालिकाओं को भी घर एवं गांव में किसी आयोजन का नेतृत्व अथवा संचालन के अवसर कम ही मिलते है। इसलिए बालिकाओं को भी अनिवार्य रूप से इस कार्यक्रम का हिस्सा बनाया। लगातार प्रार्थना सभा एवं विद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों के संचालन से बच्चों में एक अलग तरह का आत्मविश्वास आने लगा एवं वे बच्चे गांव में होने वाले कार्यक्रमों में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाने लगे। बच्चों के अन्दर की झिझक एवं भय जाता रहा है एवं आज प्रत्येक बच्चा कार्यक्रमों के संचालन के लिए उत्सुक रहता है।

इसी कार्य के लिए एक और प्रयास प्रारंभ किया, जब भी मैं शिक्षण कार्य कर रहा होता हूं तो बोर्ड पर लिखने का कार्य बच्चों से करवाता हूं। यह प्रयास भी समय के साथ अच्छे परिणाम देने लगा है। चूंकि बच्चे बोर्ड पर लिखते समय सभी साथियों की नजर में कुछ अलग महसूस करते हैं जिससे उनमें उस समूह के नेतृत्व की क्षमता का विकास होता है। इसी प्रकार बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाकर कुछ बिन्दु देकर उनके मध्य वाद–विवाद भी मेरी कक्षा का एक अभिन्न अंग है। बच्चे अपने समूह के प्रमुख बिन्दुओं को चार्ट–पेपर पर लिखकर समूह की ओर से प्रस्तुतिकरण भी करते हैं। अन्य समूह के बच्चे उनके प्रस्तुतिकरण पर प्रश्न भी पूछते हैं। अब मैं यकीनन कह सकता हूं कि उपरोक्त गतिविधियों से बच्चों की झिझक दूर होती है। उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास भी होता है।

मानव सभ्यता के विकास को यदि समझने का प्रयास करें तो हमने अनेक खोजें एवं आविष्कार किये है। इन खोजों एवं अविष्कारों के पीछे हमारे प्रश्न पूछने की प्रवृति अथवा हमारी जिज्ञासा ही रही है। इसलिए किसी भी मनुष्य के लिए दुनिया को जानने का सबसे अच्छा तरीका अवलोकन एवं प्रश्न करना हो सकता है। बच्चे जन्म से ही जिज्ञासु होते हैं एवं वे जैसे–जैसे बड़े होते जाते हैं वे अनेक प्रश्न अपने माता–पिता एवं घर के अन्य लोगों से पूछते भी हैं। अभिभावक कई बार जवाब दे पाते है कई बार नहीं भी दे पाते।

किन्तु मैंने अपने अध्यापन के शुरुआती समय में यह महसूस किया की स्कूल में आये हुए बच्चे कोई प्रश्न नहीं पूछ रहें है। इसका कारण जानने का भी प्रयास किया किन्तु कुछ ख़ास कारण पता नहीं लगा सका। शायद नये माहौल एवं नए लोगों से डरते होंगे इसलिए प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं कर पाते होंगे। इस प्रक्रिया के दौरान सोचा की कक्षा शिक्षण का प्रमुख अंग ही प्रश्न पूछने को बना दिया जाए तो शायद यह समस्या हल हो सकती है। अतः प्रत्येक पाठ को पढ़ाने के बाद बच्चों को कुछ समय दिया जाता है कि वे उस पाठ से कुछ प्रश्न बना सकें। इस प्रक्रिया में ध्यान रखने वाली बात यह है कि बच्चों को भयमुक्त एवं सहज वातावरण उपलब्ध

करवाया जाए। जिसमें वे अपने मन में आये प्रश्नों को सभी के समक्ष रख पायें। यह प्रक्रिया जब लगातार होने लगी तो बच्चे उत्साह के साथ प्रश्न बनाने एवं पूछने लगे। प्रश्न बनाने की प्रक्रिया में बच्चों से चर्चा कर उन्हें यह भी समझाने का प्रयास किया कि प्रश्न वे बनाए जायें जो वे नहीं जानते या जो बातें वे जानना चाहते है। पहले–पहल बच्चे सीधे–सीधे पढाए गए पाठ से प्रश्न बना लेते थे जिनके उत्तर पाठ में सीधे ही मिल जाया करते थे। लगातार प्रयास के बाद बच्चों में प्रश्न पूछने एवं बनाने की कला का विकास होने लगा है। अब वे वही प्रश्न पूछते हैं जिनकी उन्हें जानकारी नहीं होती।

इसी तरह हर सम–सामयिक घटना के समय भी बच्चों को घटना से जुड़ी जानकारी अपने अभिभावकों एवं गांव के अन्य लोगों से एकत्रित करने के लिए प्रोजक्ट के रूप में कार्य दिया जाता है। इस प्रक्रिया में भी बच्चे घर में, गांव में लोगों से प्रश्न पूछते हैं। मुझे लगता है कि इस प्रक्रिया से बच्चे धीरे–धीरे ही सही किन्तु समाज की प्रक्रियाओं पर अपनी भूमिका दर्ज करवाने लगे हैं एवं सवालों के माध्यम से वे समाज को समालोचनात्मक ढंग से भी देखने लगे हैं।

(लेखक राजकीय जूनियर हाई स्कूल, बोंगा भटवाड़ी, उत्तरकाशी में अध्यापक के पद पर हैं)

प्यारी मम्मी

नमस्ते

आज हमारे विद्यालय में इकोक्लब का गठन हुआ है, हम सब बच्चों ने कुछ न कुछ काम करना है जैसे दूसरों को समझाना कि वे पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचायेंगे। और अपने आसपास कूड़ा करकट न फैलायें।

मैम ने अपनी माँ को एक लेटर लिखने को भी बोला तो मम्मी मैं आपको इस लेटर में यह बात समझाना चाहती हूं कि आप और चाची जब भी जंगल लकड़ी काटने जायेंगी तो हरे पेड़ मत काटना और गांव की और भाभी और चाची लोगों को भी समझायेगी।

मम्मी हमने जब बाल शोध किया तथा उसमें मेला हुआ एक गाना गाया ''ना काटो मुझे बड़ा दुखता है' उस गाने में जब पेड़ को काटा जाता है तो वह रोता है। उसे भी दर्द होता है और हमारी मैम ने भी तो बताया कि पेड़ में भी प्राण होता है।

और हां मम्मी हमारे पास जो दो तेल के खाली कन्टर हैं उनसे हम अपने घर के बाहर रखने के लिए दो कूड़ा दान बनायगें– जैविक और अजैविक। मम्मी पापा से दो रंग के डब्बे मंगा देना बाजार से। एक कूड़ादान में हरा रंग लगायेंगे और एक में नीला। जैविक और अजैविक कूड़ादान।

मम्मी स्कूल की मीटिंग में भी जरूर आना है।

आपकी बेटी !

– चांदनी फर्स्वाण

कक्षा–7

राजकीय जूनियर हाई स्कूल, चौरासों